भाकृअनुप - राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि सलाहकार सेवा

कोई भी कृषि कार्य करने से पहले स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार कोविड -19 दिशानिर्देशों का पालन करें

अगस्त 2021 के द्वितीय पखवाड़े की रणनीतियाँ

प्रतिरोपित धान

- **एक ही खेत से अलग किए गए अधिक दिनों वाली पौधों या क्लोन पौधों को** 33 **पौधे प्रति पूंजा प्रति वर्गमीटर की दर पर खाली स्थान को भरें।**

- हाथों से निराई के विकल्प के रूप में रोपाई करने के 3-7 दिनों बाद शाकनाशी बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल + प्रीटिलाक्लोर (लोंडेक्स पावर / इरेज़ स्ट्रॉन्ग) 4 किग्रा / एकड़ दर पर में 4 किग्रा सूखी रेत मिलाकर प्रयोग करें या रोपाई करने के 3-5 दिनों बाद पाइराज़ोसल्फ्यूरॉन-इथाइल 80 ग्राम/एकड़ छिड़काव करें या रोपाई करने के 10-12 दिनों बाद (खरपतवार की 2-3 पत्ती अवस्था) पर बिस्पायरीबैक सोडियम 10 एससी (नोमिनी गोल्ड) 120 मि.ली./एकड़ दर पर छिड़काव करें या रोपाई के 15-20 दिन बाद पेनॉक्सुलम + साइहालोफॉप ब्यूटाइल (विवाया) 900 मिली/एकड़ दर पर या रोपाई के 15-20 दिन बाद फेनोक्साप्रोप-पी-एथिल+ एथोक्सिसल्फ्यूरॉन (राइस स्टार + सनराइज) 240+50 ग्राम/एकड़ दर पर 16 लीटर क्षमता का 8 टैंकों में छिड़काव करें।
- उथली निचलीभूमि/मध्यम भूमि में अधिक उपज देने वाली किस्मों के लिए रोपे गए धान में 35 किलो यूरिया/एकड़ और संकर किस्मों के लिए 42 किलो यूरिया/एकड़ जुताई की अवस्था में प्रयोग करें।
- **जस्ता की कमी वाले क्षेत्रों में, यदि अंतिम भूमि की तैयारी के दौरान जिंक सल्फेट प्रयोग नहीं किया गया है, तो धान की रोपाई के** 30 **और** 45 **दिनों के बाद जस्ता**-EDTA 0.5 **ग्राम** / 1 **लीटर दर पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या, खेत में जस्ता की कमी के लक्षण दिखाई देने पर** 15 **दिनों के अंतराल पर** 0.5% **जिंक सल्फेट घोल** (**एक एकड़ में** 400 **लीटर पानी में** 2 **किग्रा जिंक सल्फेट**+10 **किग्रा चूना**) **तीन बार छिड़काव करें।**
- तना छेदक आक्रांत वाले क्षेत्रों में, अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम 5०००० अंडे/एकड़ (३ कार्ड/एकड़) साप्ताहिक अंतराल पर तब तक छोड़ें जब तक कि कीटों की संख्या अधिक न दिखाई दे।
- **तना छेदक और पत्ती फोल्डर के वयस्क कीटों को आकर्षित करने और मारने के लिए** 1 **प्रकाश जाल/एकड़ की दर से लगाएं।**

- धान की नर्सरी में तना छेदक और पत्ता मोड़क फोल्डर के संक्रमण की निगरानी के लिए 3 फेरोमोन ट्रैप/एकड़ रखें। जब भी नर कीट/जाल की संख्या 4 या 5 तक पहुँच जाए, तो अजाडिरक्टिन 0.15% ईसी 800 मिली/एकड़ दर पर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4% जीआर 4 किग्रा/एकड़ 1:1 के अनुपात में रेत के साथ मिलाकर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी दर पर या कार्टैप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर या फ्लूबेनडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **जब भी दो मुड़ी हुई पत्तियां/पूंजा दिखाई दें तो पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल** 18.5% **एससी** 60 **मिली/एकड़ दर पर या फ्लूबेंडियामाइड** 20 **डब्ल्यूजी** 50 **ग्राम/एकड़ या**, **करटाप** 50 **डब्ल्यूपी** 400 **ग्राम/एकड़ दर से या क्विनालफॉस** 25 **ईसी** 640 **मिली/एकड़** 200 **लीटर दर से पानी मिलाकर छिड़काव करें।**
- यदि दौजी निकलने की अवस्था में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है, तो टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 75% 1 मिली प्रति लीटर पानी दर पर या हैक्साकोनाजोल 50% 2 मिली प्रति लीटर पानी दर पर या वालिडामाइसिन 3 एल 2 मिली/लीटर दर पर छिड़काव करें। इस छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।
- जीवाणुज अंगमारी /जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, प्लांटोमाइसिन 1 ग्राम / लीटर दर पर एवं इसके साथ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 1 ग्राम / लीटर पानी में 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।
- यदि नर्सरी में पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, तो टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम या रोग को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डब्लयूपी 2 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है अन्यथा, बेल (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) के पत्तों के निचोड़ को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से रोग की प्रकोप को कम करने में मदद मिल सकती है।

शुष्क सीधी बुआई धान

- निचलीभूमि क्षेत्रों में, जहां सीधी बुआई की गई है और खरपतवार नियंत्रण के लिए शाकनाशी का उपयोग नहीं किया गया है, खेत में पर्याप्त पानी (कम से कम 7-10 सेमी खड़ा पानी) जमा होने के बाद 'बेउसनिंग' किया जा सकता है। 'बेउसनिंग' के बाद अर्ध-गहरे/गहरे पानी वाले क्षेत्रों में 18 किग्रा यूरिया/एकड़ और उथले निचलीभूमि क्षेत्रों मे 36 किग्रा यूरिया/एकड़ टाप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें।
- सीधी बुआई धान में जहां खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए शाकनाशी का उपयोग किया गया है, अधिकतम दौजी निकलने के चरण में दूसरी टाॅप ड्रेसिंग के रूप में 18 किग्रा

यूरिया/एकड़ प्रयोग करें। उपरीभूमि किस्मों में बालियां निकलने की अवस्था में 18 किग्रा यूरिया/एकड़ प्रयोग करें।

- भूरा धब्बा होने की स्थिति में, प्रोपिकोनाजोल 25ईसी/1 मिली दर पर या मैनकोजेब 75 डब्ल्यूपी या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी/2ग्राम पानी या कार्बेन्डाजिम 64%+मैनकोजेब 8% 75डब्ल्यूपी/1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- सीधी बुआई धान में पीला तना छेदक, पत्ती फोल्डर, जीवाणुज अंगमारी, आच्छद अंगमारी को नियंत्रित करने के लिए रोपित चावल के लिए उल्लिखित सिफारिशों का पालन करें।

नोटः कम वर्षा और नहर सिंचाई के पानी की अनुपलब्धता के कारण धान के खेत में नमी की कमी के लिए सलाह

- यदि खेत की मिट्टी में पर्याप्त नमी है तो उर्वरकों का टाप ड्रेसिंग या तो रोपाई या सीधी बुआई वाले धान में करें, अन्यथा किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान के खेत में उर्वरकों की टाप ड्रेसिंग को तब तक के लिए स्थगित कर दें जब तक कि वर्षा या सिंचाई के पानी से पर्याप्त मिट्टी की नमी प्राप्त न हो जाए।
- विलंब से रोपाई करने के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे शीघ्र या मध्यम शीघ्र पकने वाली किस्मों के 25-30 दिनों वाली पौधों और लंबी अवधि की किस्मों के 45-50 दिन पुराने पौधों का उपयोग करें। पुराने पौधों को कीचड़दार मिट्टी में उथली गहराई पर 15 x 15 सें.मी. और 4-5 पौध प्रति पूंजा की दूरी पर रोपें।
- पर्याप्त वर्षा के साथ तटीय क्षेत्रों में अगस्त के अंत तक रोपाई जारी रह सकती है, जबकि आंतरिक जिलों में 20 अगस्त तक रोपाई पूरी कर लेने की सलाह दी जाती है।
- लंबे समय तक शुष्क अवधि के तहत, यदि सिंचाई का पानी उपलब्ध है, तो धान की फसल के अधिकतम दौजी निकलने के चरण के दौरान मिट्टी में पर्याप्त नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई उथली गहराई में करें।
- जब मिट्टी में पर्याप्त नमी न हो तो धान के खेत में खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए खरपतवार-पूर्व या खरपतवार-पश्चात शाकनाशी का प्रयोग न करें।
- यदि धान की नर्सरी में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण (पीलापन) और पत्ती के अग्र भाग में भूरापन दिखाई दे तो 0.5% जिंक सल्फेट + 2.5% यूरिया के मिश्रित घोल का छिड़काव करें।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में जहां पर्याप्त वर्षा होने के बाद भी अधिक दिनों वाली पौधों के कारण धान की रोपाई संभव नहीं है, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 90-100 दिनों वाली पूर्व-अंकुरित बीजों की सीधी बुवाई कीचड़दार संतृप्त मिट्टी में करें।
- सीधी बुआई धान में नमी की कमी को दूर करने के लिए काओलिन 3% या केसी1%, सायकोसेल 1000 पीपीएम (1 मिली वाणिज्यिक उत्पाद/1 लीटर पानी) का छिड़काव करें।